Q. बेरोज़गारी के विभिन्न प्रकार क्या हैं? उदाहरण सहित विस्तृत व्याख्या कीजिए।

बेरोज़गारी (Unemployment) आधुनिक विश्व की सबसे गंभीर आर्थिक एवं सामाजिक समस्याओं में से एक है। किसी भी देश की सबसे बड़ी संपत्ति उसके मानव संसाधन होते हैं। यदि देश के लोग शिक्षित, कुशल और कार्य करने के इच्छुक होने के बावजूद रोजगार प्राप्त नहीं कर पाते, तो यह न केवल व्यक्ति बल्कि पूरे राष्ट्र के विकास में बाधा बनता है। भारत जैसे विकासशील देश में बेरोज़गारी की समस्या विशेष रूप से गंभीर है क्योंकि यहाँ जनसंख्या वृद्धि की गति तेज़ है, जबकि रोजगार के अवसर उसी अनुपात में नहीं बढ़ रहे हैं।

अर्थशास्त्र के अनुसार, जब कोई व्यक्ति कार्य करने की क्षमता रखता हो, कार्य करने की इच्छा रखता हो, प्रचलित मजदूरी दर पर कार्य करने के लिए तैयार हो, फिर भी उसे रोजगार प्राप्त न हो, तो उस स्थिति को बेरोज़गारी कहते हैं।

भारत में बेरोज़गारी के अनेक रूप देखने को मिलते हैं। प्रत्येक प्रकार के बेरोज़गार की अपनी विशेषताएँ, कारण तथा प्रभाव होते हैं। इसलिए बेरोज़गारी के विभिन्न प्रकारों का अध्ययन करना आवश्यक है।

बेरोज़गारी का अर्थ (Meaning of Unemployment)

बेरोज़गारी वह स्थिति है जिसमें कार्य करने की इच्छा और क्षमता रखने वाला व्यक्ति काम की तलाश करता है, लेकिन उसे उचित रोजगार प्राप्त नहीं होता। बेरोज़गारी केवल आय की कमी नहीं है, बल्कि यह व्यक्ति के आत्मसम्मान, सामाजिक प्रतिष्ठा और मानसिक स्वास्थ्य को भी प्रभावित करती है। बेरोज़गारी से राष्ट्रीय आय कम होती है, गरीबी बढ़ती है तथा देश का आर्थिक विकास धीमा पड़ जाता है।

बेरोज़गारी की प्रमुख विशेषताएँ :-

- व्यक्ति कार्य करने में सक्षम होता है।
- कार्य करने की इच्छा रखता है।
- प्रचलित मजदूरी पर कार्य करने के लिए तैयार होता है।
- रोजगार की तलाश करता है।
- रोजगार उपलब्ध न होने के कारण आय अर्जित नहीं कर पाता।
- बेरोज़गारी के विभिन्न प्रकार

1. खुली बेरोज़गारी (Open Unemployment)

जब कोई व्यक्ति पूर्ण रूप से बेरोज़गार हो और उसे किसी प्रकार का काम न मिले, तो उसे खुली बेरोज़गारी कहते हैं। यह बेरोज़गारी विशेष रूप से शिक्षित युवाओं तथा शहरी क्षेत्रों में अधिक दिखाई देती है।

मुख्य विशेषताएँ

- व्यक्ति पूरी तरह बेरोज़गार रहता है।
- कार्य करने की इच्छा और योग्यता दोनों होती हैं।
- आय का कोई नियमित स्रोत नहीं होता।

उदाहरण:

बी.ए., एम.ए., बी.टेक. या एम.बी.ए. की पढ़ाई पूरी करने के बाद भी किसी युवक को कई महीनों या वर्षों तक नौकरी नहीं मिलती।

2. प्रच्छन्न बेरोज़गारी (Disguised Unemployment)

जब किसी कार्य में आवश्यकता से अधिक लोग लगे हों और कुछ लोगों को हटाने पर भी उत्पादन में कोई कमी न आए, तो उसे प्रच्छन्न बेरोज़गारी कहते हैं।

भारत के ग्रामीण क्षेत्रों और कृषि में यह सबसे अधिक पाई जाती है।

मुख्य विशेषताएँ

- अतिरिक्त श्रमिकों का उत्पादन में योगदान बहुत कम होता है।
- उत्पादन समान बना रहता है।
- श्रमिक कार्य करते हुए भी वास्तव में बेरोज़गार होते हैं।

उदाहरण:

यदि किसी खेत में 5 मजदूरों की आवश्यकता है, लेकिन वहाँ 10 लोग कार्य कर रहे हैं, तो अतिरिक्त 5 लोग प्रच्छन्न बेरोज़गार कहलाएँगे।

3. मौसमी बेरोज़गारी (Seasonal Unemployment)

जब किसी व्यक्ति को वर्ष के केवल कुछ महीनों में ही काम मिलता है और शेष समय वह बेरोज़गार रहता है, तो इसे मौसमी बेरोज़गारी कहते हैं।

मुख्य विशेषताएँ

- वर्षभर रोजगार उपलब्ध नहीं रहता।
- कृषि, पर्यटन तथा चीनी उद्योगों में अधिक देखने को मिलती है।

उदाहरण:

धान की रोपाई और कटाई के समय किसानों को काम मिलता है, लेकिन बाकी महीनों में वे बेरोज़गार रहते हैं।

4. शिक्षित बेरोज़गारी (Educated Unemployment)

जब उच्च शिक्षा प्राप्त व्यक्ति को उसकी योग्यता के अनुसार रोजगार नहीं मिलता, तो इसे शिक्षित बेरोज़गारी कहते हैं।

आज भारत में यह समस्या तेजी से बढ़ रही है।

मुख्य विशेषताएँ

- उच्च शिक्षित युवाओं में अधिक।
- योग्यतानुसार नौकरी का अभाव।
- कई बार कम योग्यता वाली नौकरी करने को मजबूर होना।

उदाहरण:

एम.एससी. या पीएच.डी. की डिग्री रखने वाला व्यक्ति यदि नौकरी न मिलने के कारण छोटे-मोटे कार्य करे या बेरोज़गार रहे।

5. तकनीकी बेरोज़गारी (Technological Unemployment)

जब नई मशीनों, कंप्यूटरों, रोबोट और आधुनिक तकनीकों के प्रयोग से श्रमिकों की आवश्यकता कम हो जाती है, तो इसे तकनीकी बेरोज़गारी कहते हैं।

मुख्य विशेषताएँ

- मशीनें मानव श्रम का स्थान ले लेती हैं।
- उत्पादन बढ़ता है लेकिन रोजगार घटता है।

उदाहरण:

बैंकों में कंप्यूटर और एटीएम आने से कर्मचारियों की संख्या कम हो गई।

6. संरचनात्मक बेरोज़गारी (Structural Unemployment)

जब अर्थव्यवस्था की संरचना में परिवर्तन के कारण कुछ उद्योग बंद हो जाते हैं या नए उद्योगों की आवश्यकता उत्पन्न होती है और पुराने श्रमिक नई परिस्थितियों के अनुरूप स्वयं को ढाल नहीं पाते, तब संरचनात्मक बेरोज़गारी उत्पन्न होती है।

उदाहरण:

पुरानी कपड़ा मिल बंद होने से हजारों श्रमिक बेरोज़गार हो जाना।

7. घर्षणात्मक बेरोज़गारी (Frictional Unemployment)

जब व्यक्ति एक नौकरी छोड़कर दूसरी नौकरी की तलाश में कुछ समय तक बेरोज़गार रहता है, तो इसे घर्षणात्मक बेरोज़गारी कहते हैं।

उदाहरण:

एक शिक्षक सरकारी नौकरी की तैयारी के लिए निजी विद्यालय की नौकरी छोड़ देता है और नई नौकरी मिलने तक बेरोज़गार रहता है।

8. चक्रीय बेरोज़गारी (Cyclical Unemployment)

यह बेरोज़गारी आर्थिक मंदी या व्यापारिक चक्रों के कारण उत्पन्न होती है।

मुख्य विशेषताएँ

- आर्थिक मंदी में उत्पादन घटता है।
- कंपनियाँ कर्मचारियों की छँटनी करती हैं।

उदाहरण:

मंदी के समय किसी ऑटोमोबाइल कंपनी द्वारा हजारों कर्मचारियों को नौकरी से निकाल देना।

9. स्वैच्छिक बेरोज़गारी (Voluntary Unemployment)

जब व्यक्ति अपनी इच्छा से उपलब्ध रोजगार स्वीकार नहीं करता, तो इसे स्वैच्छिक बेरोज़गारी कहते हैं।

उदाहरण:

उच्च वेतन की प्रतीक्षा में कम वेतन वाली नौकरी स्वीकार न करना।

10. अल्प रोजगार (Underemployment)

जब व्यक्ति अपनी योग्यता से कम स्तर का कार्य करता है या उसे पर्याप्त समय तक काम नहीं मिलता, तो इसे अल्प रोजगार कहते हैं।

उदाहरण:

- एक इंजीनियर का मजबूरी में दुकान पर सेल्समैन का कार्य करना।
- भारत में बेरोज़गारी के प्रमुख कारण
- तीव्र जनसंख्या वृद्धि।
- रोजगार के अवसरों की कमी।
- दोषपूर्ण शिक्षा प्रणाली।
- कौशल एवं प्रशिक्षण का अभाव।
- कृषि पर अत्यधिक निर्भरता।
- औद्योगिकीकरण की धीमी गति।
- तकनीकी परिवर्तन।
- पूँजी की कमी।
- ग्रामीण क्षेत्रों का पिछड़ापन।
- सरकारी नौकरियों की सीमित संख्या।
- भ्रष्टाचार एवं भाई-भतीजावाद।
- आर्थिक विकास की असमान गति।
- बेरोज़गारी के दुष्परिणाम
- गरीबी और भुखमरी में वृद्धि।
- अपराध एवं भ्रष्टाचार में बढ़ोतरी।
- सामाजिक तनाव एवं असंतोष।
- मानसिक तनाव, अवसाद एवं निराशा।
- राष्ट्रीय आय में कमी।
- आर्थिक विकास की गति धीमी होना।
- मानव संसाधनों का दुरुपयोग।
- पलायन में वृद्धि।
- परिवारों की आर्थिक स्थिति कमजोर होना।
- सामाजिक असमानता बढ़ना।
- बेरोज़गारी दूर करने के उपाय
- रोजगारपरक शिक्षा को बढ़ावा देना।
- कौशल विकास एवं व्यावसायिक प्रशिक्षण।
- लघु एवं कुटीर उद्योगों का विकास।
- स्वरोज़गार एवं स्टार्टअप को प्रोत्साहन।
- कृषि का आधुनिकीकरण।
- नए उद्योगों की स्थापना।
- ग्रामीण विकास कार्यक्रमों का विस्तार।
- महिलाओं एवं युवाओं के लिए विशेष रोजगार योजनाएँ।
- जनसंख्या नियंत्रण।
- सार्वजनिक एवं निजी निवेश में वृद्धि।
- डिजिटल अर्थव्यवस्था और सेवा क्षेत्र का विस्तार।
- उद्यमिता विकास कार्यक्रमों को बढ़ावा देना।

निष्कर्ष

बेरोज़गारी भारत की सबसे जटिल आर्थिक एवं सामाजिक समस्याओं में से एक है। इसके विभिन्न प्रकार—खुली, प्रच्छन्न, मौसमी, शिक्षित, तकनीकी, संरचनात्मक, घर्षणात्मक, चक्रीय, स्वैच्छिक तथा अल्प रोजगार—देश की आर्थिक व्यवस्था के अलग-अलग पहलुओं को प्रभावित करते हैं। बेरोज़गारी केवल व्यक्ति की आय को नहीं घटाती, बल्कि समाज में गरीबी, असमानता, अपराध और सामाजिक असंतोष को भी बढ़ाती है। इसलिए सरकार, निजी क्षेत्र और समाज को मिलकर रोजगार सृजन, कौशल विकास, उद्यमिता तथा औद्योगिक विकास पर विशेष ध्यान देना चाहिए। यदि शिक्षा को रोजगारोन्मुख बनाया जाए, उद्योगों का विस्तार किया जाए तथा युवाओं को स्वरोज़गार के अवसर उपलब्ध कराए जाएँ, तो बेरोज़गारी की समस्या को काफी हद तक कम किया जा सकता है।